IJAER/ September-October 2020/Volume-9/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

द्वाराहाट क्षेत्र के पुरातात्विक स्रोत, मंदिर स्थापत्य कला व निर्माण शैली का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 नीरज रूबाली
एम0बी0पी0जी0 कालेज
हल्द्वानी।

घनानंद
इतिहास विभाग।
एम0बी0पी0जी0 कालेज
हल्द्वानी।

द्वाराहाट उत्तराखण्ड राज्य के अल्मोड़ा में स्थित है, जो रानीखेत से लगभग 32 किलोमीटर दूर स्थित है द्वाराहाट उत्तराखंड का एक छोटा सा कस्बा है। द्वाराहाट के चारों ओर का परिदृश्य बेहद मनोरम है।

द्वाराहाट शाखा के कत्यूरियों ने अनेक मंदिरों, नौलौं तथा मूर्तियों का निर्माण कराया। राजा मानदेव द्वारा साके 1259 ईसवी सन् 1337 में वासुदेव त्रिपाठी को भूमि दान किया गया था। सोमदेव का साके 1271 ईसवी सन् 1349 में एक नौला द्वाराहाट में तथा इसी राजा द्वारा गनाई में गणेश मूर्ति की स्थापना साके 1276 ईसवी सन् 1354 में की गई थी। द्वाराहाट से प्राप्त अभिलेखीय साक्ष्यों से इस बात की पुष्टि होती है कि कत्यूरियों की द्वाराहाट शाखा काफी वैभव संपन्न थी। एटकिंसन ने इसका उल्लेख नहीं किया है।

द्वाराहाट से गुलण नामक व्यक्ति का शिव-पार्वती मूर्ति-पीठिका लेख मिला है। जिसकी तिथि स्पष्ट न होने से 1143 ई अथवा 1145 ईस्वी मानी गई है। इसी गुलण का दूसरा अभिलेख 1143 ईसवी का द्वाराहाट के निकट थलकोरल नौल में विष्णु प्रतिमा में मिला है जिसके अनुसार वहां गुलण ने विष्णु मंदिर की स्थापना की थी।

साधुवर देव ने द्वाराहाट के बद्रीनाथ मंदिर का निर्माण संवत् 1241 वि. ईसवी सन् 1185 में किया था। इसी मंदिर में लक्ष्मी की मूर्ति की स्थापना संवत् 1242 वि. ईसवी सन् 1184 में की थी। साधुवर देव के दो अन्य अभिलेख, एक अभिलेख द्रोणागिरी से साके 1103 ईसवी सन् 1181 का तथा दूसरा गणेश मूर्ति अभिलेख इसी वर्ष का द्वाराहाट में मिला है।

द्वाराहाट क्षेत्र से कुछ अन्य अभिलेख भी प्राप्त हुए हैं। जिनमें सोमदेव का साके 1136 ईसवी सन् 1214 तथा साके 1211 ईसवी सन् 1289 के गरुड़ारुक्ष लक्ष्मी-नारायण (कालीखोली) मूर्ति अभिलेख में संसार पाल देव का नाम अंकित है। कला एवं कालक्रम को ध्यान में रखते हुए यह नाम कत्यूरी राजवंश से संबंधित है।

कत्यूरी वंश के इतिहास को जानने में इस वंश के शासकों द्वारा निर्मित अभिलेखों का महत्वपूर्ण स्थान है। अब तक पांच ताम्रपत्र अभिलेख तथा एक शिलालेख इसी वंश के राजाओं के प्राप्त हो चुके हैं। यह अभिलेख पांडुकेश्वर, बागेश्वर तथा बालेश्वर से प्राप्त हुए हैं। बागेश्वर से प्राप्त अभिलेख शिलालेख हैं। पांडुकेश्वर में ललितसूर, देशट, पद्मढ़ व सुभिक्षराज तथा बागेश्वर से प्राप्त अभिलेख भूदेव द्वारा निर्मित है। इन अभिलेखों से कत्यूरी वंश के राजाओं की वंशावली तथा शासन व्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। कत्यूरी वंश से संबंधित अनेक स्मारक तथा कलाकृतियां प्राप्त हुई है जिनसे तत्कालीन धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति पर विशेष रूप से प्रकाश पड़ता है। स्मारकों से कत्यूरी काल में उत्तराखंड की सांस्कृतिक उन्नति के साथ-साथ राजा तथा प्रजा की धार्मिक भावना की अभिव्यक्ति भी होती है। इस काल के स्मारक बागेश्वर, जागेश्वर, पांडुकेश्वर, जोशीमठ, लाखामंडल, वैजनाथ, बद्रीनाथ, देवप्रयाग, सोमेश्वर इत्यादि स्थानों में हैं। इस काल के मंदिरों में गुप्तों के समान शिखरों का निर्माण किया गया है।

इस वंश के अभी तक प्रकाश में आ चुके अभिलेख इस प्रकार हैं

- एक भूदेव का बागेश्वर शिलालेख (Atkinson 1884:469-ff).
- देशट देव का पांचवे राज्यारोहण वर्ष का बालेश्वर ताम्रपत्र (Atkinson 1884:471).
- ललित शूर देव का 21वें राज्यारोहण वर्ष का पांडुकेश्वर ताम्रपत्र (Kielhorn 1896:177-84)
- पद्मट देव का 25 वें राज्यारोहण वर्ष का पांडुकेश्वर ताम्रपत्र (Sircar 1955-56:284-ff).
- बौड़सी(अल्मोड़ा) के मंदिर अभिलेख (Joshi 1970:41-ff)
- सुभिक्षराज देव का चौथे राज्यारोहण वर्ष का पांडुकेश्वर ताम्रपत्र (Sircar 1955-56:290-ff)
- ललितशूर देव का कंडारा ताम्रपत्र (कठोच, यशवंत सिंह 1977: 19-ff)
- द्वाराहाट क्षेत्र से प्राप्त विभिन्न मंदिर
- मृत्युंजय मंदिर
- रतन देव मंदिर
- बद्रीनाथ मंदिर
- गूजर देव मंदिर
- मनियाल मंदिर
- कछारी मंदिर
- वन देव मंदिर

यह सभी मंदिर वर्तमान में पुरातत्व विभाग के संरक्षण में हैं जो मंदिर इस समय पुरातत्व विभाग के संरक्षण में नहीं है वह इस प्रकार हैं

- ❖ केदारनाथ मंदिर
- ❖ चंडेश्वर महादेव का मंदिर
- ❖ विमांडेश्वर का महादेव मंदिर
- ❖ दूनागिरी मंदिर

द्वाराहाट के मंदिरों की निर्माण शैली

पुरावशेशों एवं साहित्यिक साक्ष्य यहां मंदिरों के अस्तित्व के संकेत ईसा पूर्व काल से देते हैं। वर्तमान में प्राचीनतम मंदिर सातवीं सदी से प्रारंभ होते हैं। यहां के प्राचीन मंदिर यह स्पष्ट करते हैं कि गुप्त युगीन काल के उपरांत उसे बीज से प्रस्फुटित विभिन्न क्षेत्रीय मंदिर स्थापत्य शैलियों में से हिमालय शैली भी एक थी। क्योंकि इस शैली का विकास उत्तराखंड में कत्यूरी काल में लगभग सन् 650 से 12 वीं सदी के मध्य हुआ था। हमने इस शैली को कत्यूरी शैली का नाम दिया है। यह उल्लेखनीय है कि संपूर्ण उत्तराखंड में शास्त्रीय आधार पर निर्मित हर प्राचीन मंदिर को कत्यूरी देवाल के नाम से संबोधित किया जाता है ।

द्वाराहाट के मंदिर समूहों में प्रयुक्त निर्माण शैली का अध्ययन निम्नलिखित विधियों से किया जाना उचित जान पड़ता है, जिसका वर्णन इस प्रकार है।

रेखा शिखर शैली:- इस शैली के मंदिरों में शिखर भाग चारों ओर से ऊपर को थोड़ा सा आवृत लिए उठाया गया है। मूल प्रासाद के चतुर्भुज आकार तल में पूर्व छंद में एक-एक प्रक्षेप दिया है जो उर्ध्व छंद में लंबवत रेखाओं का आभास देता है। शिल्प शास्त्र में इस प्रक्षेप को 'रथ' या 'भद्र' कहते हैं और इस शैली के मंदिरों को 'लतिन' कहते हैं। द्वाराहाट सहित संपूर्ण उत्तराखंड में अधिकांश मंदिर रेखा शिखर शैली के बने हैं और इनके तल और उर्ध्व छंद में हर ओर एक-एक प्रक्षेप है। अतः यह द्विअंग हैं अर्थात इनमें भद्र एवं कर्ण उभार हैं जो संयुक्त रूप से त्रिरत्न बनाते हैं।

द्वाराहाट में बद्रीनाथ मंदिर एकमात्र ऐसा रेखा मंदिर है जो त्रिरत है। अर्थात इसमें भद्र एवं कर्ण के मध्य एक और प्रक्षेप है जिसे प्रतिरथ कहते हैं। ये सब मिलकर पंच रथ मंदिर बनाते हैं। इस मंदिर के सादृश्य ही जागेश्वर, कटारमल, आदिबद्री, गोपेश्वर आदि मंदिर रेखा शिखर शैली में बने हैं। द्वाराहाट का रतन देव मंदिर भी रेखा शिखर शैली का बना है।

अनेकाण्डक शैली:- द्वाराहाट स्थित गूजरदेव मंदिर भी पंचरथ का ही एक उदाहरण है। परंतु इस मंदिर का शिखर छोटे-छोटे लतिन शिखरों से बना है जो श्रृंग या उरःश्रृंग कहे जाते हैं। इन से निर्मित शिखर युक्त मंदिर शिखरी कहा जाता है। चंपावत का बालेश्वर-सुग्रीवेश्वर मंदिर भी पंचरथ है परंतु इसका शिखर भाग खंडित है। गूजर देव मंदिर अनेकाण्डक शिखर में श्रृंग के आधार के चारों ओर श्रिंगों का समूह और प्रमुख दिशाओं में उरःश्रृंग प्रत्यय एवं कूट कक्ष, कूट तथा तिलक अलंकरण पाया जाता है। गूजर देवाल मंदिर इसका एकमात्र उदाहरण है।

मिश्रक शैली:- इस शैली के अंतर्गत वह सभी मंदिर सम्मिलित हैं जो कि एक से अधिक शैलियों के मिश्रण से बने हैं। उदाहरणार्थ रेखा एवं फांसना शिखरों के मिश्रण

से बने मंदिर जिनका भद्र लातिन एवं कर्ण फांसना शैली का है विमाण्डेश्वर का मंदिर मिश्रक शैली का एक उदाहरण है। इस शैली के अन्य मंदिर वासुदेव मंदिर नारायणकोटी मंदिर आदि है।

बिरखाम

उत्तराखंड में अनेक स्थानों में 'बिरखाम' प्रकाश में आए हैं। प्रत्येक महत्वपूर्ण स्थानों पर आज भी बिरखाम मिलते हैं। यह बिरखाम राज्य की सीमा का निर्धारण करते थे। लमगड़ा तथा ईड़ा के साथ-साथ द्वाराहाट के पास मल्ली मिरई में भी बिरखाम शब्द प्रयुक्त हुए हैं। द्वाराहाट के पास मल्ली मिरई से प्राप्त कत्यूरी कालीन देवाल के नाम पर ही इस स्थान का नाम बिड़ैखान अथवा बिरखाम रहा होगा। स्थानीय निवासियों के कथनानुसार मल्ली मिरई के आसपास स्थित देवाल शायद कत्यूरी कालीन सैनिक गुप्तचरों के लिए स्थापित भवन रहा होगा। इसका मुख्य कारण मल्ली मिरई का द्वाराहाट की सीमा पर स्थित होना है। इस स्थान

से रानीखेत तथा बग्वालीपोखर की तरफ से आने वाले किसी भी सैनिक खतरे पर नजर रखी जा सकती है। मल्ली मिरई का देवाल मूर्ति रहित है यहां पर दो देवाल बने थे, जिनमें एक देवाल नष्ट हो गया है तथा इसके पत्थर उसी स्थान पर अभी भी रखे पड़े हैं। बलवंत सिंह के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि इन 'बिरखाम' में वीर पुरुषों के चित्र बनाए गए थे।

निष्कर्ष

कत्यूरी काल से उत्तराखंड क्षेत्र में मंदिर निर्माण शैली का विकास हुआ। इन मंदिरों पर गुप्त काल का प्रभाव दिखाई देता है। कत्यूरी राजा धार्मिक दृष्टि से काफी उदारवादी थे। ये राजा मुख्यतया शैव, वैष्णव तथा शाक्त धर्म के उपासक थे। द्वाराहाट के मंदिरों के मुख्य द्वार पर गणेश जी की प्रतिमा प्राप्त हुई है। गणेश की उपासना कत्यूरी काल में प्रारंभ हो चुकी थी। कत्यूरी राजाओं द्वारा अधिक संख्या में शिव के मंदिरों की स्थापना करना तथा मूर्ति रहित मंदिरों में शिवलिंग की उपासना से विदित होता है कि कत्यूरी राजा शैव धर्म के प्रति ज्यादा आशक्त थे। शिवजी के अधिकतर मंदिर नदियों के तटों पर तथा संगम पर बनाए गए हैं। शाक्त धर्म से संबंधित लगभग सभी मंदिर पहाड़ों की चोटी पर बनाए गए हैं। मंदिरों के नाम के अंत में जहां पर भी 'श्वर' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है वह सभी मंदिर महादेव को समर्पित हैं तथा यह मंदिर नदी के किनारे अथवा संगम तटों पर बनाए गए हैं। मंदिर के पास ही श्मशान घाट भी बने हैं। द्वाराहाट में स्थित मंदिरों में महावीर स्वामी कि ध्यान मग्न मुद्रा में मूर्ति अलंकृत है। इससे विदित होता है कि कत्यूरी राजा जैन धर्म से प्रभावित थे या कत्यूरी राज्य काल में जैन धर्म की भी स्वीकारोक्ति थी। मंदिरों की बड़ी-बड़ी शिलाओं को जोड़ने के लिए लोहे की शलाकाओं के प्रयोग से कत्यूरी कालीन तकनीकी का आभास होता है। द्वाराहाट क्षेत्र के पास प्राप्त नौलों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि कत्यूरी राजा

प्रजा हितैषी थे। प्रत्येक नौले के पास भगवान विष्णु की मूर्ति स्थापित की गई है अतः भगवान विष्णु जल के देवता के रूप में कत्यूरी काल में सर्वमान्य थे।द्वाराहाट के हाट गांव में अवलोकन करने से पता चलता है कि कई पुराने घरों की दीवारें कत्यूरी कालीन मंदिरों के अवशेष से प्राप्त पत्थरों से चिनि गई हैं। इन पत्थरों पर कत्यूरी कालीन तकनीकी के प्रयोग के चिन्ह दिखाई देते हैं।

यद्यपि द्वाराहाट क्षेत्र के मंदिर समूह उत्तर भारत में समकालीन मंदिरों के समान भव्य नहीं बने हैं तथापि इन मंदिरों का इतिहास एवं कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। गूजर देव मंदिर कला प्रेमियों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। प्रत्येक मंदिर के पास नौला पाया गया है। कुछ मंदिर पुरातत्व की दृष्टिकोण से आज भी महत्वहीन है जैसे मल्ली मिरई का देवाल।

स्रोत–

१. कुमाऊं का इतिहास:- पं॰ बद्रीदत्त पांडे
२. अल्मोड़ा जनपद का पुरातत्व:- मदन मोहन जोशी
३. कत्यूरी शासनकाल में उत्तराखंड की प्रशासनिक, संस्कृति एवं आर्थिक स्थिति एक अध्ययन:- राजेश कुमार सिंह डसीला
४. कुमाऊं में सांस्कृतिक पर्यटन द्वाराहाट, देवीधुरा व पूर्णागिरि के विशेष संदर्भ में:- वीरेंद्र पाल
५. पहाड़ 7 "कत्यूरी भूमि की यात्रा":- राहुल सांकृत्यायन
६. उत्तरांचल हिमालय समाज, संस्कृति, इतिहास एवं पुरातत्व:- माहेश्वर प्रसाद जोशी, कुमारी ललित प्रभा जोशी
७. उत्तराखंड इतिहास और संस्कृति:- चंद्रशेखर दुम्का, घनश्याम जोशी
८. कुमाऊं का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास (11 वीं से 18 वीं शताब्दी ईस्वी):- डॉ॰ विद्याधर सिंह नेगी

९. उत्तराखंड समग्र अध्ययन:- सविता मोहन

१०. उत्तराखंड में गौरवशाली कत्यूरी राजवंश का समग्र अध्ययन पृष्ठ 203:- बलवंत सिंह

११. साक्षात्कार-नरुली देवी, पुजारिन, चंदेश्वर मंदिर द्वाराहाट

१२. साक्षात्कार-गजेंद्र सिंह राणा, मल्ली मिरई

१३. साक्षात्कार-राजेंद्र पुरी, भारतीय पुरातत्व विभाग द्वाराहाट में कार्यरत

१४. Dwarahat Wikipedia